Rayat Shikshan Sanstha's

# Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur-Perid
## Tal. Shahuwadi, Dist. Kolhapur-415101

(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur, NAAC Reaccredited -'B' Grade with CGPA-2.82)

**ONE DAY**

**INTERDISCIPLINARY NATIONAL CONFERENCE ON**

## The Impact of Globalization on Languages, Literature, Education, Social Sciences Library, Environment, Sports and Games

**Saturday, 17th March, 2018**

# Certificate

This is to certify that ~~Prin.~~/~~Dr.~~/Prof./~~Mr.~~/~~Ms.~~ मारुफ मुजावर of चंद्राबाई शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी has participated in One Day Interdisciplinary National Conference on "The Impact of Globalization on Languages, Literature, Education, Social Sciences, Library, Environment, Sports and Games" organized by Faculty of Arts and Internal Q uality Assurance Cell of Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur-Perid on Saturday, 17th March 2018. He/She has Attended/Chaired a session / Presented a research paper entitled मध्यकालीन संत साहित्य में वैश्वीकरण

| | | |
|---|---|---|
| **Dr. Anil Ubale**<br>Coordinator | **Prof. Sachin Chavan**<br>Organizing Secretary | **Prin. Dr. Sunil Kamble**<br>Convener |

# मध्यकालीन संत साहित्य में वैश्वीकरण

प्रा. मारूफ मुजावर
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
चंद्राबाई शांताप्पा शेडुरे कॉलेज, हुपरी जि.कोल्हापुर

निर्गुण संतों ने सामाजिक उत्पोड़न और जाति प्रथा व बाह्यांडंबर का विरोध किया है। कबीर ने कहा है कि सभी स्त्री-पुरूष जो इस जगत में निवास करते है, ईश्वर के सजीव प्रतिबिंब हैं। उनकी शिक्षा भी रही है कि केवल सत्य ही स्वाभाविक है। अपने हदय में सत्य को खोजो, क्यांकि बाह्य धार्मिक आडंबरो में कही सत्य नहीं है। सत्य प्रेम और प्राणियों के प्रति दया में प्रकट होता है। घृणा पर विजय प्राप्त करों, समस्त मानव जाति के लिए अपने हदय का प्रेम उड़ेल दो क्योंकि सभी प्राणियों में ईश्वर है। बाह्याडंबर व छुआछुत व्यर्थ है क्योंकि सभी मनुष्य अपनी प्रकृति व संरचना में समान हैं। इसलिए उन्होंने यह अवधारणा रखी थी -

"वैसनो भया तो क्या भया, बूझा नहीं विवेक
छाया तिलक, बनाई करि, दाध्या लोक अनेक।
एके पवन एक ही पाणी, करी रसोई न्यारी जानी
पाटी सूं पाटी ले पोती, लागी कहो कहां छू छाते।"

भावात्मक एकता की दिशा में सूफी विचारकों व कवियों का योगदान उत्तर-दक्षिण के क्षेत्र में कम नहीं है, जा निर्गुण संतो के चिंतन की भावभूमि से अलग नहीं माने जाएँगे। मुल्ला दाऊद का 'पंदायन" और मलिक मुहम्मद जायसा हिंदी-उर्दू सें भी निर्गुण भक्ति व सूफी साधना से भावात्मक एकता वाली साधना की अविस्मरणीय विरासत निजामी मसनवी कदमराव पदमराव), फिरोज (यूसुफनामा), अपरफ (नौसेरहार), गवासी (सेकुलमुल्क व बदी उज्जपा), वजही (कुतुब मुश्तरी), मुकीपी (चंदर बदन और पहिपार), नुसरती (गुलशने इश्क), हाशिपी (यूसुफ जुलेखा) आदि की कृतियों में देखने में देखने को मिलती है जिसका सप्यक् विवेचन राहुल सांकृत्यायन व श्रीराम शर्मा ने "दक्खिनी काव्यधारा" और "दक्खिनी साहित्य : उद्भव ओर विकास" में किया है।

दक्षिण में जन्मे रामानुजाचार्य ने भावात्मक एकता एवं मनुष्त्व की स्थापना में प्रगतिशील भूमिका निभाई है। वे आलवारों की परंपरा में जन्मे थे और विश्णू की भक्ति का आधार लेकर निम्न जाति के लोगों को ऊँचा दर्जा दिया, सभी में मनुष्यत्व की स्थापना की और देशी भाषा में रचित "शठकोपाचार" के तियेल्ल प्रभूति भक्ति ग्रंथ को वैष्णवों का वेद कहकर समादृत किया । शूद्रों और अंत्य के साथ-साथ मुसलमानों को भी इन्होंने अपनो शिष्य परंपरा में स्वीकारा। आलवारों का भक्तिवाद शास्त्रों का सहारा पाकर सारे भारत में फैल गया।

निर्गुण भक्ति की भावात्मक एकता और सुफियों की अनन्य प्रेम भावना व मनुष्यता का आधार एक ही है। कबीर के शिष्य दादू, जो राजपूताना के एक गरीब बुनकर के भर पैदा हुऐ थे, सूफी विचारों से प्रभावित हुए थे। अपने गुरू के समान उन्होंने हिंदुओं के एकतत्ववाद और सूफियों के रसळयवाद को भावों के स्तर पर एक ही समन्वय भावना का पर्याय पाकर कहा -

"तुम अलग-अलग संप्रदायों की मांग करते हो,
यह पृथ्वी और आकाश, जल और वायु, दिन और रात,
चंद्रमा और सूर्य, सदा ईश्वर की सेवा में लगे रहते हैं।
ये किस अदृश्य, उस सप्त सिंधु, उस ईश्वर के
होने के अतिरिक्त
और किसी संप्रदाय के नहीं।"

प्रेम, मातृत्व की भावना को प्रथम देते हुए दादू ने हिंदुओं और मुसलमानों को समान ही माना है।

वर्तमान युग के अस्पृश्यता विरोधी विचार की निर्माणकारी पृष्ठभूमि में, समस्त भारत के इन निर्गुण संतों की प्रभावशाली भूमिका को विस्मृत नहीं किया जा सकता। दक्षिण भारत में योगी वेमन्ना, सिद्धप्पा, तिरूवल्लुवर ओर सर्वज्ञहु आदि ने भी निर्गुण भक्ति के भावनात्मक पक्षों पर जोर दिया है। योगी वेपन्न ने तीर्थ यात्रा व धार्मिक बंधविश्वासों पर हिंदू व मुस्लिम पतमतांतरों के विभेदों पर तार्किक अन्वष्ण की दृष्टि से विवेचना की है -

"तिरूपती बोव तुरक दासरि गाडु
काशी बोव लंज दगरित गाडु
कुक्क सिंह मगुने, गोदावरिकि बोव
विश्वदा भिरामा विनुरवेमा।"

अर्थात तिरूपति जाने से मुसलमान भगवान का भक्त नहीं वन जाता, काशी का तीर्थाटन करने से सूअर हाथो नहीं बनता और गोदावरी में स्नान करने मात्र से कुत्ता शेर नहीं बनता सारांशा यह है कि भक्ति के बिना तीर्थाटन करना है। योगी बेमन्ना ने मुसलमानों की तीर्थ पात्राओं का खंडन इस प्रकार किया है।

"मक्क कु जनमेल मगुडु ता रनिल पेक पेन कर्स इंदु लेडा।
अन्मिट परिपूर्ण, इल्ला महम्मदु
विश्वदा भिरापा विनुर वेमा।"

भाव यही है कि पक्का जाकर क्यों आते हा? जो परमात्मा वहाँ है क्या वह यहाँ नहीं है? जबकि सब में पूर्ण रूप से अल्ला मोहम्मद का नूर समाया हुआ है।

वेमन्ना की काव्य-सर्जना कबीर के समान ही सामाजिक चेतना के सुधार की प्रवृत्ति लेकर चलती है। उन्होंने सामाजिक वैषम्य, धार्मिक मतभेदों को लक्ष्य कर मानसिक तौर पर दिग्भ्रमित समाज को, अपने चिंतन व लेखन से भावात्मक एकता की सार्थक दिशा दी है। कबीर, वेमन्ना, सिद्धप्पा, तिरूवल्लुवर की परंपरा में सर्वज्ञडु ने संत भावनाओं के अनुरूप जाति-पॉति के भेदभाव को लेकर आम जनता को फटकारा है-

"नडेव दोदे भूमि, कुडिवु दादे नीरू
मडुवग्नि मोदेतिरल
कुलगोत्र नडुवे व तंडू सर्वज्ञ।"

अर्थात सभी मनुष्य एक ही वसुधा पर चलते हैं, एक ही पृथ्वी का पानी पीते हैं तथा अंत में एक ही प्रकार की अग्नि में जलते हैं तो जाति-पॉति एवं गोत्रादि का प्रश्न क्यों उत्पन्न होता है।

भावात्मक एकता की निर्गुण भक्ति संबंधो अवधारणा सपसामायिक सूफी कवियों को ही प्रभावित नहीं करती है बल्कि अपने परवर्ती रचनाकारों को भी अनुप्रेरित करती है। उदाहरण स्वरूप नजीर को निम्न पंक्तियों का भावालोकन कीजिए :

"झगड़ा न करो मिल्लतो, मजहब का कोइ यां
जिस राह में जो आन पड़, खुश रहे, हर यां
जुन्नार गले या कि बगल बीच हो कुअआं
आशिक तो कलंदर है, न हिंदू न मुसलमां
काफिर न कोई साहबे इस्लाम रहेगा
आखिर वही अल्लाह का इक नाम रहेगा।

नजीन ने कबीर की परंपरा में न केवल निर्गुण ईश्वर का ही समर्थन और पाखंड का विरोध किया है बल्कि सूफी भावना में दीक्षित होने के बावजूद सगुण ईश्वर की वंदना भी की है। निर्गुण भक्ति भक्ति के विभिन्न साधकी के योगदान के कारण ही नीच, शूद्र समझी जानेवाली जातियों, श्रमिकों, किसानों-मजदूरों व आत्महीनता से भरे मनुष्य मात्र को गौरव से जीने का संबल व आत्मिक बल मिला है।

भक्ति आंदोलन को लोक-चेतना में अपेक्षित परिवर्तन लानेवाला आंदोलन स्विकारा जाता है, जिसने भारतीय अस्मिता को नवीन आधार दिया है, संक्रमणशील अवस्था में मानवतापरक दृष्टिकोण अपनाने की पहल की है, जहाँ अनपढ़ "संत" या साधारण विचारक को कोटि में स्वीकारे गए है। साधारण जीवनयापन के विधान को निर्गुण भक्तों-संतों ने भावात्मक एकता का नवीन परिप्रेक्ष्य दिया है। ये संत कवि भौतिक सुखों के प्रति उदासीन थे पर युग-निर्माता युग-द्रष्टा के रूप में महत्वाकांक्षी भी स्वीकारे जा सकते हैं। वेमन्ना के शब्दों में यह अवधारणा अभिव्यक्त हुई है :

"कामीगामी वाडुं कविकाडु रविकाडुं
कामीगाका मोक्षगामी काडुं

कामी येन वाडे कवि योनु रवि योनु
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा।"

अर्थात जो व्यक्ति महत्वाकांक्षी नहीं है, वह न कवि बन सकता है, न रवि और न ही मुमुक्षु। महत्वाकांक्षी नहीं है, वह न कवि बन सकता है, न रवि और न ही मुमुक्ष। महत्वाकांक्षी व्यक्ति (विचारक, दार्शनिक, संत या भक्त) ही कत्रि बनता है या रवि बनता है।

निर्गुण भक्ति आंदोलन के भावात्मक पक्ष के प्रसार की सीमाऐं रही हैं आणि स्त्री-जीवन में चेतना का अभाव, नारी को माया का रूपक मानना, सदियों से चलो आ रही वर्ण-व्यवस्था, विजातीय शासन, आक्रमण व आतंक का परिवेश, कर्महीन जीवन की परलोकी भावना आदि कई सारे प्रसंग हैं जिनके कारण हमारे मध्ययुगीन भारत में पुनर्जागरण की प्रक्रिया तीव्र नहीं हो सकी । कै. दामोदरन् ने स्वीकारा है कि "भक्ति आंदोलन की अपनी सीमाऐं थी। यह सच है कि सामूहिक प्रार्थनाओं, नृत्यों और संकीर्तनों से संतों का व्यक्तिमत्व जनता की सृजनात्मक क्षमता को प्रेरणा प्रदान कर रहा था। उनके व्यक्तिमत्व एवं कृतित्व ने जता में एक नई चेतना जगाई और क्रियाशीलता के लिए विशाल जनसमुदाय में नई स्फूर्ति पैदा की उसने सामंतवाद के अंतर्गत फैले जातिवादी और धार्मिक अलगाव को भी खत्म किया और सामंतवाद विरोधी संघर्षों में जान फूंकी... आम जनता में जागृति ते पेढा की, किंतु वह सामाजिक ओर आर्थिक व्यवस्था में मौजूद विसंगतियों के वास्तविक कारणों को समझाने और मानव के दुखों और पीड़ाओ के नूतन समाधान प्रस्तुत करने में सफल नही हुआ।"

निर्गुण भक्ति आंदोलन के सम्यक् विश्लेषण के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं में परिव्याप्त सिद्धों-नाथों, सूफियों, संतों-भक्तो के मिले-जुले "पैटर्न" के विश्लेषण व विवेचन आवश्यक है जिससे हम अपने सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्जागरण को प्रक्रिया से अवगत हो सकें। यह विपुल श्रम साध्य कार्य ऐतिहासिक संक्रमण का के दौर में विभिन्न भावाई व साहित्यिक गतिविधियों-प्रवृत्तियों को मूल्यांकनपर प्रस्तुति पर ही संभव है। केवल दो या तीन भाषा साहित्य के क्षेत्रों की तुलना व कार्य से हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को पूर्णतः नही जान पाएँगे। कारण जिस समय उत्तरी-पश्चिमी प्रांतों में सिद्धों-नाथें का वर्चस्व था, उस समय दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्रें में शैव व शाक्तों की टक्कर वैष्णवों से भी, और जिस समय निर्गुण भक्ति की लहर संतों व सूफियों के प्रभाव से उत्तर - पश्चिम व मध्य भारत में जागृत हो रही थी उस समय तमिल, तेलुगु, कन्नड़ व मलमालम साहित्य में कमोबेश रूप से उच्चवर्ग व निम्नवर्ग के बीच सांस्कृतिक सौमनस्य की भावना आलवार, नायनार व शैवधर्मी-निंगायत साधकों के कारण दौड़ रही थी।

यदि हम अपनी ऐतिसाहिक व सांस्कृतिक परंपरा पर विचार करें तो आभास होता है कि "भारत को महान सांस्कृतिक विरासत के मूल्य भारतीय समाज में परिवर्तन लाने के इच्छुक बुद्धिजीवी वर्ग को प्रेरणा देते रहे हैं।" चाहे उपनिषद का मूलमंत्र "चरैवेति-चरैवेति" हो या बुद्ध का "बहुजन हितया बहुजन सुखाय" सिद्धांत हो, अथवा सिद्धों-नाथों का मानव मात्र को समान मानने वाला सिद्धांत हो, अथवा नानक, कबीर, नामदेव, वेमन्ना, सर्वज्ञडु आदि संतों की करूणा और समतामूलक जनवादी, मानववादी, क्रांतिपरक वाणी हो या सूफी संतों व दक्खिनी हिंदी के साधकों की सांस्कृतिक एकता की भावात्मक आधार भूमि हो, या "वैष्णव जन तो तेणें कहिए जो पीर पराई जाणे रे", ये सारी अभिव्यक्तियाँ भावात्मक एकता की भावना को जानने में सहाय्यक भूमिका ही प्रमाणित होंगी।

## संदर्भ सूची

१. रामचंद्र शुक्ल / चिंतामणि
२. रोहिताश्य : "कबीर एवं वेमना : एक अध्ययन" की भूमिका
३. कै. दामोदरन : भारतीय चिंतन परंपना
४. शिवकुमार मिश्र : भक्ति काव्य और लोक-जीवन
५. हजारो प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य की भूमिका
६. कै. दामोदरन : भारतीय चिंतन परंपरा
७. पूरनचंद्र जोशी : परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम